

वार्तालाप-514 डेन्टल (चंडीगढ़) तारीख-10.2.08
Disc.CD No.514, dated 10.2.08 at Dental (Chandigarh)

0.05-5.25

जिज्ञासु- आदिकाल को याद रखो और अनादिकाल को याद रखो।

बाबा- आदिकाल में देवतायें होते हैं, अनादिकाल में आत्मा होते हैं। अनादिकाल माना परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लिया। कौनसा काल हुआ? अनादिकाल। और आदि कहेंगे जब रुद्रमाला के जो भी भाँति हैं वो सब विजयमाला में एड़ हो जायें, देवता बन जायें, विजयी बन जायें, विकारों पर पूरी जीत हो जायें, पक्के देवता बन जायें तो आदिकाल हो गया। आदिकाल शुरू होता ही है आदिनाथ से। आदिदेव और आदिदेवी से।

जिज्ञासु- अनादि काल याद आना माना हमे अपना पिछला जन्म याद आना चाहिए।

बाबा- पिछला जन्म याद आया तो मध्य हो गया। जो पिछले जन्म हैं वो मध्य में हैं, आदि में हैं या अनादि में हैं?

जिज्ञासु- पिछला मतलब हमारा जो...

बाबा- किससे पहला?

जिज्ञासु-.....

Time: 0.05-05.25

Student: Keep in mind the initial period (*aadi kaal*) and the eternal period (*anadi kaal*).

Baba: In the initial period (*aadi kaal*) there are deities and in the eternal period (*anadi kaal*) there are souls. Eternal period means [that they] brought the Supreme Abode to this world. Which period is it? The eternal period. And it will be said to be the initial period when all the members of the *Rudramala* are added to the *Vijaymala*, when they become deities, when they become victorious, when they gain complete victory over the vices, when they become firm deities, then it is the initial period. The initial period begins with *Aadinath* himself, with *Adi Dev* (the first deity) and *Adi Devi* (the first female deity) themselves.

Student: To remember the eternal period means we should remember our previous birth.

Baba: If you remember the previous birth that is the middle period. Are the past births in the middle, in the beginning or in the eternal [period]?

Student: Past means our....

Baba: Before what?

Student said something.

बाबा-ये संगमयुग है। संगमयुग में अंत भी है, अंतिम जन्म भी है और संगमयुग में आदि का जन्म भी है और संगमयुग होता ही इस सृष्टि पर। परमधाम में कोई संगम होता नहीं। तो यहाँ तो आदि का जन्म है या अंत का जन्म है। अभी जो वर्तमान जन्म चल रहा है उसको आदि कहें या अंत कहें? क्या कहें?

जिज्ञासु- अंत।

बाबा- अगर अंत कहें तो अंत में विनाश होता है कि नहीं? बाबा तो कहते हैं - विनाश सामने खड़ा है। अभी महाभारी महाभारत युद्ध शुरू हो गया है कि सामने खड़ा है?

जिज्ञासु-.....

बाबा- तो अभी तो अंत नहीं है। हाँ, संगम पर हैं। कभी मनन-चिंतन-मंथन की ऊँची स्टेज में चले जाते हैं और उससे ऊपर उठते हैं तो आत्मिक स्थिति में चले जाते हैं। एकदम अनादि और नीचे गिरते हैं तो अंतिम जन्म में आ जाते हैं। देखने वाले अपने स्वरूप को, स्वचिंतन करते हुए स्व रूप को पहचानेंगे ना कि मैं आत्मा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आदिकाल में कौनसा विशेष पार्ट बजाने वाली हूँ। अनादिकाल में तो आत्मा ही होती है। पार्ट की बात ही नहीं।

जिज्ञासु-

बाबा— आदि, मध्य और अंत। आदि में देवता, मध्य में कनवर्शन हुआ फिर अंत में असुर, राक्षसी दुनिया। अभी अनादि नहीं है। 1 सेकेण्ड, 2 सेकेण्ड, 5 मिनिट, 10 मिनिट ज्यादा से ज्यादा। निराकारी स्टेज बनती ही नहीं। एक्युरेट संगम जब कहें तब निराकारी स्टेज शुरू होगी। वो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही।

Baba: This is the Confluence Age. Confluence Age includes the last period, the last birth as well as the first birth and the Confluence Age is in this world itself. There is no Confluence [Age] in the Supreme Abode. So, here it is either the first birth or the last birth. Should the present birth be called the first one or the last one? What should it be called?

Student: The last one.

Baba: If it is called the last one, then does destruction take place in the end or not? Baba says, destruction is standing in front of you. Has the *Mahabhari Mahabharata* war started or is it standing in front of you?

Student said something.

Baba: So, it is not the end now. Yes, we are in the Confluence. Sometimes we reach the high stage of thinking and churning. And when we rise higher than that, we reach the soul conscious stage, completely eternal. And when we fall down, we come to the last birth. Observers (those who check themselves) will realize their form, the form of their self, while thinking about the self, “which special part am I, the soul, going to play in the initial period (*aadi kaal*) on this world stage”, won't they? In the eternal period there is only the soul. There is no question of a part at all.

Student said something

Baba: The beginning, the middle and the end. [There are] deities in the beginning, then conversion took place in the middle and then [there are] demons, [there is] a demoniac world in the end. Now it is not eternal (period). [It lasts for] 1 second, 2 seconds, 5 minutes, or at the most 10 minutes. We cannot achieve an incorporeal stage at all. The incorporeal stage will begin when it is the accurate Confluence [Age]. That is also *numberwise* according to the efforts.

14.45—16.30

जिज्ञासु— बाबा एक मुरली में ऐसा प्वाइन्ट आया कि साधारण तन में तो आता हूँ लेकिन गरीब में नहीं.....

बाबा— न बहुत गरीब में, ऐसा भी गरीब नहीं जो सड़क पर पड़े—2 भीख माँगता हो रोटी टुकड़ की ऐसे में भी नहीं आता हूँ और ऐसे साहूकार में भी नहीं आता हूँ। सन् 36 की बात बताई जो लखापति, करोड़पति हो। आया क्या? नहीं आया? ब्रह्मा के तन में नहीं आया?

जिज्ञासु—.....

बाबा— अरे, ये तो बात तो झूठी हो गई। लखापति, करोड़पति के तन में आया कि नहीं आया? आया?

जिज्ञासु— माँ का पार्ट....

बाबा— वो माँ के रूप में आया; बाप के रूप में नहीं आया। जो बाप के रूप में आया था वो तो वास्तव में गरीब था। ब्रह्मा बाबा का नौकर था। भल उनका ऊँचा संबंधी था, बहनोई था लेकिन समाज में बहुत रईस वर्ग का नहीं था।

Time: 14.45-16.30

Student: Baba, there is a point in a murli that I come in an ordinary body, but not in a poor one....

Baba: Neither very poor.... he is not so poor that he seeks alms on the roads for pieces of roti (food); I do not come in such person and I do not come in a very prosperous person either. It

was said about the year (19)36, when there was a millionaire, billionaire. Did He come [at that time]? Did He not come? Did He not come in Brahma's body?

Student said something.

Baba: Arey, then this statement is false. Did He come in the body of a millionaire, billionaire or not? Did He come?

Student: Mother's part....

Baba: He came in the form of a mother; He did not come in the form of a Father. The one [in whom] He came in the form of a Father, was actually poor. He was Brahma Baba's servant. Although he was his senior relative, he was his brother-in-law (*bahnoi* or sister's husband), but he did not belong to the very elite section of the society.

16.32–20.10

जिज्ञासु— बाबा संगम में बोला कि दो—तीन जन्म भी हो सकते हैं।

बाबा— कोई—2 आत्माओं के 2—3 जन्म भी हो सकते हैं।

जिज्ञासु— 84 के अलावा आते हैं।

बाबा— अलावा नहीं; 84 के अंदर ही होते हैं। अलावा क्यों होंगे?

जिज्ञासु— बाबा किसी आत्मा के 85 जन्म भी होते हैं?

बाबा— नहीं। 84 जन्म के 84 ही बाप होंगे। 85 वाँ बाप कहाँ से आ जायेगा?

Time: 16.32-20.10

Student: Baba, it has been said that there can be two-three births in the Confluence Age.

Baba: Some souls can have even upto 2-3 births.

Student: Are they apart from the 84 (births)?

Baba: They are not apart from that. They are included within 84. Why will they be apart from that?

Student: Baba, does any soul have 85 births also?

Baba: No. There will be 84 fathers in 84 births. From where will the 85th father come?

जिज्ञासु— बाबा.....एक्सट्रा ऑर्डेनरी जन्म भी होता...

बाबा— एक्सट्रा ऑर्डेनरी जन्म का मतलब ये हुआ कि जैसे प्रजापिता है। यज्ञ के आदि में जब 60 साल की आयु हुई तो बाप ने प्रवेश किया। 60 साल की आयु पूरी होते—2 शरीर छोड़ा तो आयु पूरी नहीं हुई ना ब्रह्मा की।

जिज्ञासु— 60 साल के बाद.....

बाबा— हाँ, 60 साल में प्रवेश किया।

जिज्ञासु— 65 साल के शरीर.....

बाबा— 64 हो, 65 हो माना वानप्रस्थी अवस्था में प्रवेश किया और वानप्रस्थी अवस्था में प्रवेश करने के बाद जब 40 साल पूरे होते हैं।

जिज्ञासु—.....

Student: Baba, there is an extraordinary birth too....

Baba: Extraordinary birth means... for example Prajapita; in the beginning of the yagya when he reached the age of 60 years, the Father entered him. He left the body when he was about to complete the age of 60 years. So, Brahma's age was not completed, was it?

Student: After 60 years.....

Baba: Yes, He entered at the age of 60 years (of Prajapita).

Student: The body was 65 years old....

Baba: Whether it is 64 or 65, it means He entered in the *vanprasthi* stage and after entering in the *vanprasthi* stage, when 40 years are completed.

Student said something.

बाबा— हाँ, जी, तो प्रवेश किया। और प्रवेश होने का पता थोड़े ही चलता है। पता चलता है क्या? गर्भ में आत्मा प्रवेश करती है तो पता चलता है कब आई? ऐसे महसूस होता है कि पहले हलचल नहीं होती थी अब हलचल हो रही है, पहले चुरपुर नहीं होती थी अब चुरपुर हो रही है। तो ऐसे ही जो यज्ञमातायें थी यज्ञ के अंदर उस समय सन् 73 से ही बाबा ने अव्यक्त वाणी में वाणी चलना शुरू कर दी — घबराओ मत बैकबोन बापदादा सामना करने के लिए कोई व्यक्ति तन द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं। इसका मतलब सन् 76 की बात नहीं है। उससे पहले ही चुरपुर शुरू हो चुकी थी माताओं के अंदर सुगबुग शुरू हो गई थी।

जिज्ञासु—.....

बाबा— ये थोड़े ही पता है कि क्या है पेट में दर्द हो रहा है कि कोई, कोई आत्मा का करिश्मा हो रहा है जो भगवान के रूप में संसार में प्रत्यक्ष होगा।

Baba: Yes, so He entered. And does anyone know about the entrance? Does anyone know? Does anyone know when a soul enters the womb? It can be felt that earlier there was no movement; now there is movement; earlier there was no activity, now there is some activity. So, similarly, the yagya mothers who were present in the yagya at that time; Baba started narrating in the Avyakta Vanis from the year (19)73 itself, “Do not be afraid, Backbone Bapdada will definitely be revealed through some corporeal body on time to confront and even now He is being revealed. It means that it is not about the year (19)76. The activity had begun within the mothers before that itself. The movement had begun.

Student said something.

Baba: She does not know what it is, whether it is a stomach ache or is it a miracle of some soul that will be revealed in the world in the form of God.

जिज्ञासु— नहीं, बाबा मुरली में बोले है ना कि उनके तो कृष्ण की तो जन्मतिथि निकाली जा सकती है। उनकी तो कोई तिथि वगैरा ही नहीं।

बाबा— जिस कृष्ण की जन्मतिथि निकाली जाती है वो सतयुग का कृष्ण है, सतोप्रधान पाँच तत्व वाला या संगमयुगी कृष्ण है सतोप्रधान आत्मा वाला?

जिज्ञासु— सतयुगी।

बाबा— सतयुगी कृष्ण है? उसकी तिथि—तारीख निकाली जाती है शास्त्रों में?

जिज्ञासु— संगमयुगी कृष्ण।

बाबा— हाँ, संगमयुगी कृष्ण है। तब तो संवत् 1—1—1 निर्धारित होगा। नहीं तो संवत् 1—1—1 सतयुग में थोड़े ही गिना जायेगा। वहाँ तो कोई हिस्ट्री मानी ही नहीं जाती है, बनती ही नहीं है।

Student: No. Baba has said in the Murli that the date of birth of Krishna can be calculated, but there cannot be any date (of birth), etc. for Him.

Baba: Is the Krishna whose date of birth is calculated the Golden Age Krishna made up of the five pure elements or is it the Confluence Age Krishna with a pure soul?

Student: The Golden Age Krishna.

Baba: Is it the Golden Age Krishna? Is his date (of birth) calculated in the scriptures?

Student: The Confluence Age Krishna.

Baba: Yes. It is the Confluence Age Krishna. It is only then that the year 01.01.01 will be fixed. Otherwise, the year 01.01.01 will not be counted in the Golden Age. No history is written there.

24.30–29.10

जिज्ञासु— बाबा सन् 36 में सेवकराम वाली आत्मा में शिवबाप ने प्रवेश किया तो वो भी तो हीरों का व्यापारी था?

बाबा— हीरों का व्यापारी था लेकिन गरीब था। उसकी छोटी-मोटी दुकान थी; चलती नहीं थी। उसकी हालत ऐसे ही थी जैसे झूठे हीरों के बाजार में कोई सच्चे हीरे रखकर के बैठ जाये छोटी सी दुकान में तो लोग क्या समझेंगे? ये भी ठगिया है, झूठी दुकान। झूठी दुकान है। झूठे हीरे बेचता होगा। उसकी दुकान पर कोई जाता भी नहीं था। बाबा का संबंधी था इसलिए बाबा ने 10 साल से उनको अपनी दुकान में रखा हुआ था। जिस समय बाबा ने दुकान छोड़ी उस समय मैनेजर के पद पर था। दुकान का मैनेजर बन गया लेकिन था तो नौकर ही ना। जब दुकान छोड़ के गये तब आधा-साजा कर लिया कि सारी दुकान की मिलकियत हमारी और मेहनत, मेहनत तुम्हारी। जो पैदाईश होगी उसमें आधा-2 हमारा हिस्सा बन जायेगा। तो दोनों एक-दूसरे के भागीदार हो गये। वो बात मुरली में बोली है अलफ को मिला अल्लाह, बे को मिली बादशाही। कौन हुआ अलफ, कौन हुआ अल्लाह और कौन हुआ बे, कौन हुआ बादशाह?

जिज्ञासु— सेवकराम को अल्लाह मिल गया।

बाबा— हाँ, अलफ को मिला अल्लाह और बे को मिली बादशाही। ब्रह्माबाबा को सारे यज्ञ की बादशाही मिल गई। उन्होंने अपना, हुआ रेल का राही, रास्ता नापा।

Time: 24.30-29.10

Student: Baba, the Father Shiv entered the (body of the) soul of Sevakram in (19)36. So, he was a diamond merchant too.

Baba: He was a diamond merchant but he was poor. He had a small shop; it was not flourishing. His condition was similar to a person who opens a small shop with real diamonds in a market (full) of false diamonds; what will people think of him? [They will think] This one is a cheat too; [it is] a fake shop. It is a fake shop; he must be selling false diamonds. Nobody used to visit his shop. He was (Brahma) Baba's relative; this is why Baba had employed him in his shop for 10 years. When Baba left the shop he was working on the post of a manager. He became the shop's manager, but he was in fact a servant only. When he (Brahma Baba) left the shop, then they divided [the assets] equally, that the entire property (investment) of the shop is mine (Brahma Baba's) and the hard work... the hard work is yours (partner's). Whatever will be the yield (earnings), we will share it equally. So, both became each other's partners. That has been mentioned in the Murli as— *Alaf* got Allah and *Be* got the emperorship. Who is *Alaf*, who is Allah and who is *Be*, who is *Badshah* (emperor)?

Student: Sevakram got Allah.

Baba: Yes, *Alaf* got Allah and *Be* got emperorship. Brahma Baba got the emperorship of the entire yagya. He became the passenger of the train and went his way.

जिज्ञासु— ब्रह्माबाबा तो अमीर थे उन्होंने गरीब.....अपनी बहन कैसे दे दी?

बाबा— ब्रह्माबाबा?

जिज्ञासु— अमीर थे ना।

बाबा— अमीर थे हाँ।

जिज्ञासु— हाँ, जी, तो ब्रह्माबाबा ने अपनी बहन गरीब के यहाँ कैसे दे दी?

बाबा— अपनी बहन के?

जिज्ञासु— बहन की शादी गरीब के यहाँ कैसे की?

बाबा— अरे, बहन की शादी बाप करता है कि ब्रह्माबाबा करता है? वो तो बड़ी बहन थी।

जिज्ञासु— बाप के लिए.....

बाबा— हाँ, बाप जो है, क्यों ऐसा होता नहीं है आजकल की दुनिया में? आजकल तो विसंगति चल रही है। घर—2 में आदमी यही चाहता है हमारी बेटी एकदम लखपति, करोड़पति के घर में चली जाये। बाद में भले तलाक हो जाये और होता ही है।

Student: Brahma Baba was rich. How did he give his sister in marriage to a poor fellow?

Baba: Brahma Baba?

Student: He was rich, wasn't he?

Baba: He was rich; yes.

Student: Yes; so how did he gave his sister in marriage to a poor family?

Baba: His sister?

Student: How did he give his sister in marriage to a poor family?

Baba: Arey, does the father perform the marriage of the sister (i.e. daughter) or does Brahma Baba (i.e. brother) perform it? She was the elder sister.

Student: For the father.....

Baba: Yes, the father; does it not happen like this in today's world? Nowadays so many deviations are taking place. Every person in every home wants his daughter to go into a millionaire or billionaire household, even if it leads to a divorce later on and it does happen.

जिज्ञासु—.....

बाबा— हाँ, हेडमास्टर।

जिज्ञासु— बाबा बोले हैं अनाज का व्यापार करते थे। हेडमास्टर का बच्चा था। हेडमास्टर का बच्चा ब्रह्माबाबा था?

बाबा— हाँ—2।

जिज्ञासु—.....

बाबा— माने बचपन में ये दोनों आत्मायें कोई साधारण पुरुषार्थी आत्मायें थोड़े ही हैं, राम और कृष्ण। बचपन में साधारण थे और बड़े होकर बड़े व्यापारी बन गये।

जिज्ञासु— राम बाप भी

बाबा— वो तो तब भी सच्चा था। क्या? राम में और कृष्ण में यही तो अंतर है। कृष्ण की राशि क्राइस्ट से क्यों मिलाई जाती है? क्योंकि क्रिश्चियन जो है, क्राइस्ट जो है, क्राइस्ट की औलाद जो क्रिश्चियन है उनमें दिखावा पॉम्प एंड शो जास्ती होता है। है कुछ ओर और दिखावा कुछ करते हैं और। ये ब्रह्माबाबा के जीवन की बात भी मुरली में बताई कि हीरे का व्यापारी था लेकिन बड़े राजशाही टाठ से रहता था और राजघरानों में घुस जाता था।

जिज्ञासु— बाबा कलकत्ता वाली दुकान सेवकराम ने कब छोड़ी?

बाबा— अब ये तो हिस्ट्री निकालो कब छोड़ी?

Student said something.

Baba: Yes, headmaster.

Student: Baba said that he used to do business in foodgrains. He was the child of a headmaster. Was Brahma Baba a headmaster's child?

Baba: Yes, yes.

Student said something.

Baba: It means that both these souls, i.e. Ram and Krishna are not ordinary purusharthis (those who make spiritual effort). They were ordinary in the childhood and after growing up they became big businessmen.

Student: Father Ram also.....

Baba: He was true even at that time. What? This is the difference between Ram and Krishna. Why is the horoscope of Krishna matched with the horoscope of Christ? It is because in the Christians, in Christ... there is prevalence of pomp and show among the Christians, the children of Christ. They **are** something and show off something else. The issue of Brahma

Baba's life has also been mentioned in the Murli that he was a diamond merchant. But he used to live like a king and he used to enter the palaces [for business].

Student: Baba, when did Sevakram leave the shop at Calcutta?

Baba: Well, find out from the history when he left (the shop)?

43.05—44.25

जिज्ञासु— बाबा बोले कराची से मुरली चली आई। (शिव) सुनाते थे बाबा लिखते थे। जगदम्बा में प्रवेशता साबित होती है ना।

बाबा— बिल्कुल—2। कोई कन्या थी क्या?

जिज्ञासु— माता थी।

बाबा— माता थी तो प्रवेश नहीं हो सकता? और एक ही माता बताई है दो माताओं में प्रवेश की बात बताई भी नहीं है मुरली में “10 वर्ष से रहनेवाला, ध्यान में जाती थी। उनमें बाबा प्रवेश करते थे, प्रवेश कर के डायरेक्शन देते थे।” तो एक पुरुष था और एक, एक स्त्री थी। बाकी मुरली में कहीं बोल दिया है अच्छी—2 बच्चियाँ जो मम्मा—बाबा को डायरेक्शन देती थी। बच्चियाँ तो, शिव की आत्मा तो बच्चियाँ ही कहेगी ना; बूढ़ी है तो क्या? एक मुरली में तो बोल भी दिया बूढ़ी बच्ची।

जिज्ञासु— उसको तो राधा बच्ची बोला है?

बाबा— ये तो एडवान्स की भाषा है। एडवान्स में समझानी के लिए राधा बताया है। मुरली में कहीं नहीं बताया गया कि किसी माता का नाम राधा था।

Time: 43.05-44.25

Student: Baba has said that Murlis are being narrated from the days of Karachi. He (Shiv) used to narrate and Baba used to write. His entry in Jagdamba is proved, isn't it?

Baba: Certainly. Was she a virgin?

Student: She was a mother.

Baba: When she was a mother, can't He enter her? And only one mother has been mentioned; the entry in two mothers has not been mentioned in the Murlis, 'He used to live together 10 years and she used to go into trance'. Baba used to enter them and give directions. So, one was a male and another was a female. It has been mentioned somewhere in the Murlis that nice daughters (*bachchiyaan*) who used to give directions to Mamma-Baba. Shiv's soul will address as '*bachchiyaan*' only; what happens if she is old? It has been said in a Murli – 'old daughter'.

Student: Has she been named Radha *bachchi*?

Baba: This is a language of the advance (party). She has been described as Radha for the sake of explanation in the advance (party). It has not been mentioned anywhere in the Murlis that there was a mother named Radha.

46.01—50.08

जिज्ञासु— बाबा बड़ी मम्मी के लौकिक नाम के साथ दीक्षित लगाया गया है। छोटी मम्मी.....

बाबा— लगाया गया है माना किसी दूसरे ने लगाया; बड़ी मम्मी ने नहीं लगाया?

जिज्ञासु— लगाया.....

बाबा— तो फिर क्यों कह रहे हैं लगाया गया?

जिज्ञासु— तो बाबा वो क्यों लगाया गया?

बाबा— अब वो बड़ी मम्मी से पूछो। जिसने लगाया उससे पूछो; हमसे क्यों पूछ रहे? बैंक में, कोर्ट में जो नाम लिखेगा, बतायेगा वो बतानेवाला खुद बतायेगा या कोई दूसरा बता देगा तो मान लेगा? बैंक मैनेजर मान लेगा, कोर्ट का जज मान लेगा?

जिज्ञासु—.....

बाबा— तो फिर।

जिज्ञासु— इच्छा से लगाया?

बाबा— माना शक है। जैसे आज की दुनिया में ये परम्परा चल पड़ी है कि घरवाली जो होती है वो हमारी दासी है। क्या है? दासी है, पाँव की चेरी है। ये दुनिया की मान्यता है, भक्तिमार्ग की मान्यता है या ज्ञानमार्ग की मान्यता है? भक्तिमार्ग की मान्यता है। ज्ञान में तो बताया आत्मा—2 भाई—2। तो आत्मा—2 भाई—2 को स्वतंत्रता नहीं देनी है? बाँध के रखना है? नाक पकड़ के चलाना है?

Time: 46.01-50.08

Student: Baba, 'Dikshit' has been suffixed (added) to the lokik name of the senior mother (*bari mummy*). The junior mother (*choti mummy*)....

Baba: Does 'has been added' mean that someone else has added it; did the senior mother not add it herself?

Student: She added.....

Baba: Then why are you saying 'has been added'?

Student: So, Baba why was it added?

Baba: Well, ask the senior mother about it. Ask the one who has added it. Why are you asking me? The person who writes [or] says his name in the bank, court; will they accept if the person himself tells them or will they accept if anyone else tells them? Will the Bank Manager accept or will the Judge of the Court accept [the other's words]?

Student said something.

Baba: Then?

Student: Did she suffix it willingly?

Baba: It means that you have a doubt. For example, a tradition has started in today's world: the wife is my servant. What is she? She is my servant; she is my maid to serve my legs. Is this the belief of the world, the belief of the path of bhakti or the belief of the path of knowledge? It is a belief of the path of bhakti. Knowledge says that souls are brothers. So, should brother-like souls not be given freedom? Should they be kept under bondages? Should they be made to follow [our directions] forcibly?

जिज्ञासु— तो कोई और भी लगा सकता है।

बाबा— लगा सकता है तो लगाए। स्वतंत्र है आत्मा। ज्ञानमार्ग में आत्मा—2 भाई—2 बन के रहना चाहिए या नकेल डाल के रखना चाहिए? भाई—2 बन के रहो। संबंधों में सबसे पहला संबंध है महाभारत का जो अर्पण करना जरूरी है। कौनसा? जिसमें माया सबसे जास्ती है? कौनसा संबंध है? पति—पत्नि का। ज्ञान में चल रहे हैं और पति—पत्नि का भाव खत्म नहीं हुआ। वो संबंध ईश्वर के लिए अर्पण ही नहीं किया। तो क्या संबंध का त्याग किया? फिर अंदर से इतना निश्चय होना चाहिए कि नय्या डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। युधिष्ठिर ने जब दांव पे लगाया द्रौपदी को तो कोई निश्चय होगा तब दांव पर लगाया कि ऐसे ही लगा दिया? निश्चय था तो दांव पे लगाया।

Student: So, someone else can also suffix it [in their name].

Baba: If he can suffix, let him do it. A soul is free. In the path of knowledge should we live as brother-like souls or should we keep them tied up? Live as brothers. Among the relationships, the first relationship that should be surrendered as per Mahabharata; which one? [The one] in which Maya interferes the most? That of a husband and a wife. If they are following the path of knowledge and if the feeling of husband and wife has not vanished, if that relationship has not been surrendered to God at all, then in what way have you renounced relationships? Then there should be so much faith from inside that the boat will shake but it will not sink. When Yudhishtir put Draupadi at stake, he must have put her at stake on the basis of some faith or did he do that simply? He had faith; that is why he put her at stake.

जिज्ञासु—.....युधिष्ठिर ब्रह्माबाबा का पार्ट बजाते हैं।

बाबा— तो?

जिज्ञासु— लेकिन एक मुरली में बाबा ने प्रजापिता का भी युधिष्ठिर का पार्ट बताया?

बाबा— लेकिन ब्रह्माबाबा, युधिष्ठिर — युद्ध में स्थिर रहनेवाला सन् 69 तक बना या उसके बाद बनता है?

जिज्ञासु— सन् 69 तक बनता है।

बाबा— 69 तक बनता है? उसके बाद वो आत्मा युधिष्ठिर का पार्ट नहीं बजाती? 69 में तो वो डगमगा गये, शरीर छूट गया, हार्टफेल हो गया। योगी का हार्टफेल होता है? ये हार्टफेल होना फेल होने की निशानी है या पास होने की निशानी है? ये तो फेल हो गये। हाँ, वही आत्मा फिर जब कोई ब्राह्मण बच्चे में या ब्राह्मणी में प्रवेश करती है तब पार्ट बजाती है धर्मराज का।

Student:Brahma Baba plays the part of Yudhishtir.

Baba: So?

Student: But in one Murli Baba said that Prajapita also plays the part of Yudhishtir.

Baba: But did Brahma Baba become Yudhishtir – the one who remains stable in war – till (19)69 or does he become after that?

Student: He becomes till (19)69.

Baba: Does he become so till (19)69? Does that soul not play the part of Yudhishtir after that? He shook in (19)69; he lost his body; his heart failed. Does a yogi's heart fail? Is this heart-fail the indication of failure or an indication of passing? He failed. Yes, the same soul plays the part of Dharmaraj when he enters a Brahmin child or a Brahmani.

52.41—54.15

जिज्ञासु— बाबा ये हिन्दू झाँकियाँ तो समुद्र में डुबाते हैं, हिन्दू झाँकियाँ जो हैं...

बाबा— हिन्दुओं की झाँकियाँ?

जिज्ञासु— हाँ, जी। मुस्लिम लोग भी ताबूत वगैरह डुबाते हैं। इसका मतलब क्या है?

बाबा— हा, ताबूत माने, ताज जो धारण किया है; बहुत ऊँचा ताज बनाते हैं उसका नाम रख दिया ताजिया (ताज—यह)। यह क्या है? ये ताज है। बहुत ऊँचा ताज उठाते हैं। हमारा ताज बहुत ऊँचा है फिर बाद में, बाद में समुद्र में डुबोए देते हैं “चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात”। थोड़ासा तो अभी बेसिक में देखने को मिला। क्या? असली ताज तो है पवित्रता की जिम्मेवारी का ताज धारण करना। ये ब्राह्मणों के दुनिया में आधारमूर्त मुसलमान है वो उस ताज को धारण करते हैं या उसका दिखावा ज्यादा करते हैं? पाम्प एड शो ज्यादा हो जाता है। बाद में वो अपनी जिम्मेवारी का ताज जो ऊँचा—2 कर के दिखाया उसे ज्ञानसागर में जाके डुबोए देते हैं। जैसे देवियों का है वैसे ताजिया का है।

Time: 52.14-54.15

Student: Baba, the Hindu tableau (i.e. idols) are drowned in the ocean.

Baba: Hindu tableau (*jhaankiyaan*)?

Student: Yes, the Muslims also drown the *taboot* etc. What does it mean?

Baba: Yes. *Taboot* means the crown that they wear. They prepare very tall crowns; it has been named *tajiya* (*taj yah*). What is this? This is a crown. They raise the crown very high [and say:] ‘Our crown is very high’. Then, later on, they drown it in the ocean. (There is a saying) *chaar din ki chaandni fir andheri raat*¹ (a nine days’ wonder). It was observed to some extent in basic (i.e. among the BKs) just now. What? The true crown is to wear the crown of the responsibility of purity. Do the root-like [souls of] Muslims in the world of

¹ lit. Moonlight for four days, then the dark night again.

Brahmins wear that crown or do they show it off more? There is more of pomp and show. Later on they raise their crown of responsibility high and show it off and then they drown it in the ocean of knowledge. The case of *tajiya* is the same as the case of *devis*.

54.18–57.40

जिज्ञासु— बाबा, ब्रह्माबाबा के द्वारा सन् 47 से जो 64 तक जो मुरली चली, उन मुरलियों का क्लेरिफिकेशन या फिर कोई वाणी तो.....

बाबा— कब से कब तक?

जिज्ञासु— सन् 47 से 64–65 तक।

बाबा— 68 तक।

जिज्ञासु— 68 तक। उन मुरली का तो क्लेरिफिकेशन कुछ....

बाबा— उन मुरली का क्लेरिफिकेशन नहीं मिल रहा है? फिर किसका मिल रहा है?

जिज्ञासु— 66, 67, 68

बाबा— पुरानी मुरलियाँ भी अभी तो दे रहे हैं। माउन्ट आबूवालों ने तो मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद पुरानी मुरलियाँ सब खत्म कर दी थी। जब से एडवान्स ज्ञान निकला है तब से मुरलियों का वजन उनकी बुद्धि में बैठ गया। तो उन्होंने चारों तरफ से वो सूचनायें भेजी कि जिनके पास पुरानी मुरलियाँ हो, गीतापाठशालाओं में रखी हुई हो वो भेजें। तो बहुतों ने तो भेजी नहीं और जो है कुछ उन्होंने भेजना शुरू किया। उनमें से कुछ एक कोई नई—2 मुरली को छापते रहते हैं बीच—2 में। ऐसे नहीं 4–5 साल की ही छाप रहे हैं। अभी जो आ रहा है उसमें से छांट—2 के एडवान्स का कितना प्वाइन्ट है, वो निकाल देते हैं और डेढ़ पेज—दो पेज मुरली को छाप के भेजते हैं बाकी खलास कर देते हैं।

जिज्ञासु— पेज का पेज उठा देते हैं।

बाबा— हाँ, जी।

Time: 54.18-57.40

Student: Baba, what about the clarification of the Murlis that were narrated from (19)47 to (19)64 through Brahma Baba?

Baba: From when to when?

Student: From 47 to 64-65.

Baba: Till 68.

Student: Till 68. The clarification of those Murlis....

Baba: Are you not receiving the clarification of those Murlis? Then the clarification of which ones are you receiving?

Student: 66, 67, 68.....

Baba: The (clarification of) old murlis are also being given now. Those in Mount Abu (i.e. the BKs) had destroyed all the old Murlis after Mamma left her body. From the time advance knowledge emerged, the importance of Murlis sat in their intellect. So, they sent notices everywhere (to the BKs) that all those who have old Murlis which might have been kept in *Gita-pathshalas* should send them [to Mt.Abu]. But many did not send (the Murlis). And whatever little they had they started to circulate it. Among those, they keep printing some new Murlis in between. It is not that they print Murlis only of [those] 4-5 years. Even among the murlis that they are printing now, there are many points related to advance. They remove those points and they print Murli of one and half to two pages. They remove the rest.

Student: They remove the entire page.

Baba: Yes.

जिज्ञासु— बाबा, बेसिक में जैसे हो रहा है वो एडवान्स में भी बीज तो जैसे यहीं हैं।

बाबा— बिल्कुल।

जिज्ञासु— बीजवाले क्या कर्म करते हैं जैसे वो मुरलियों को उड़ा देते हैं?

बाबा— अभी जो कैसेटें हैं वो तुम क्या समझते हो कि कैसेटें जो भी चल रही हैं और जो क्लेरिफिकेशन चल रहा है वो ज्यों का त्यों मिल रहा है आपको? पुरानी—2 जो कैसेटें हैं उनमें मिक्सचैरिटी है या नहीं? ध्यान से देखो।

जिज्ञासु— इसमें बाबा जैसे कोई इधर का उधर लगा.....

बाबा— हाँ, जी। जिन्होंने—2 ने, जिनके हाथ में कैसेट का काम आ गया और कैसेट करते—2 बुद्धि इधर—उधर हो गई या कहीं आपस में लगाव हो जाता है तो लगाव होने पर बुद्धि कहाँ चली जाती है? लगाववालों की तरफ बुद्धि चली जाती है। ईश्वरीय सेवा में फिर विघ्न पड़ेगा जरूर। ईश्वरीय सेवा में विघ्न पड़ता है तो क्या होता है, खुट्टा दूसरा दब गया वो दबा ही रहा, मुरली सारी बिगड़ गई बीच में। अब कहीं बाबा को पता न लग जाये। देखा कि ये तो बीच में गुम हो गई। लिया फटाक से दूसरी वाणी निकाली और उसमें, उसमें एड़ कर दिया। ऐसी कितनी कैसेटें ऐसी हुई पड़ी हैं कोई—2 गीतापाठशालायें ऐसी भी निकलेंगी जिनके पास शुरुआत का माल अभी तक रखा हुआ होगा। क्लेरिफिकेशन तो 85—86 से निकल रहा है जो कैसेटों में भर के रखा गया है लेकिन 85—86 की कोई गीतापाठशालायें भी तो होगी; जिन्होंने अपने पास सारा स्टॉक संभाल के रखा होगा। उससे टैली किया जायेगा तो सच्चाई खुल जायेगी एडवान्स की।

Student: Baba, the seeds for whatever is happening in the basic (i.e. among BKs) are present in advance (party) also.

Baba: Certainly.

Student: Just as they remove portions from Murlis, what do the seeds do?

Baba: Do you think that you are getting the cassettes and clarifications as they are? Is there mixturity when compared to the old cassettes or not? Observe carefully.

Student: Baba, someone may lift some portion from here and paste there.....

Baba: Yes. If the intellect of those who were entrusted the work of cassettes is diverted or if they develop attachment with each other and if someone develops attachment, where does the intellect go? The intellect goes towards the one for whom he has attachment. Then an obstacle will certainly be created in Godly service. What happens when obstacles are created in Godly service? If a wrong button is pressed, then the entire Murli is spoilt in between. (The person thinks) Well, Baba should not come to know of it. He observes that some portion is missing in between. He immediately takes another Vani (cassette) and adds there (i.e. in the missing portion). There are so many such cassettes, but some such Gitapathshalas will also emerge which still have the material from the beginning. Clarifications have been emerging from (19)85-86, which is recorded in the cassettes. But there must be some gitapathshalas of (19)85-86 which must have stored the entire stock carefully. If you tally with them, the truth of the advance (party) will be out.

57.52—59.06

बाबा—पर्व को ध्यान से देख रहे हो?

जिज्ञासु—प्रश्न है।

बाबा — पढ़ देंगे। ऐसी क्या बात? इसमें है जो आदि में हुआ वो ही अंत में होगा तो आदि में जिन कन्याओं—माताओं को सेवा के अर्थ भेजा गया तो क्या अंत में भी वैसे ही होगा? हमारी दिल की इच्छा ऐसी बहुत है। कैसी? जैसे आदि में कन्याओं—माताओं को बाहर भेजा गया था तो हमको भी भेजा जाये। ये बात एक एडवान्स पार्टी में नया संगठन निकला है, उसका नाम रखा गया है नया स.। ये बात एन.एस. वालों के ऊपर भी लागू होगी कि नहीं?

बाबा— अरे, होगी नहीं तो माला के नम्बर कैसे डिक्लेर होंगे। होंगे? कौनसी आत्माओं में कितनी पॉवर है कैसे पता चलेगा? सोना जब तक आग में न डाला जाये तब तक उसकी वैल्यू कैसे पता चलेगी।

Time: 57.52-59.06

Baba: Are you looking at the slip with attention?

Student: There is a question.

Baba: I will read it. What is the matter? It is written in it, whatever happened in the beginning will happen in the end. So, virgins and mothers were sent for service in the beginning; so, will it happen like this in the end as well? My heart longs for it very much! What? Just as virgins and mothers were sent outside (for service), I should also be sent. This topic... a new gathering has formed in the Advance Party, it has been named New S. Will this issue be applicable also to the ones from NS or not?

Baba: Arey, if it is not applicable to them, then how will the numbers of the rosary be declared? Will they? How can we know which soul has power to what extent? Until gold is put into fire, how will its value be ascertained?

59.08—1.04.51

जिज्ञासु— बाबा, लम्बे सफर का जैसे बाहर फील्ड में है, वहाँ खान—पान का और स्थूल स्नान के बारे में बताइये।

बाबा— कितने दिन के लम्बे सफर पे जाते हैं?

जिज्ञासु— लगभग 6 महीने।

बाबा— लगभग 6 महीने। एक एडवान्स पार्टी में कोई बाबा था। वो सालों साल बाहर चला गया। एक पुरानी अटैची में फोल्डिंग स्टोव रख लिया, एक तवा रख लिया, एक थाली रख ली।

जिज्ञासु— बाबा सफर में ऐसा एक रूल बन गया है कि स्टोव ले जा नहीं सकते।

बाबा— अरे, खाली तो ले जा सकते हैं। खाली स्टोव ले जा सकते हैं कि नहीं? नहीं ले जा सकते?

जिज्ञासु— ले जा सकते हैं।

बाबा— ले जा सकते हैं। दुकानें हर जगह हैं। हाँ, ये है कि अब वो मिट्टी का तेल ब्लैक मिलेगा तो थोड़ा दुगना—तिगना कॉस्टली मिल जायेगा। अच्छा, वो भी बात छोड़ो मुरली में तो बोला है कच्ची सब्जियों पर हिर जाता है कोई, फलों पर हिर जाता है, तो जिंदा नहीं रहेगा? नहीं रहेगा? अरे, बोलती बंद कर ली।

जिज्ञासु— रह जायेगा बाबा।

बाबा— हाँ, जिंदा रहेगा। और ही सात्विक बन जायेगा।

जिज्ञासु— सारी बात.....

बाबा— सारी बात है, जितना कायदा उतना फायदा।

Time: 59.08-01.04.51

Student: Baba, please tell us how to manage the issues of food and physical bathing in the outside field when we are on long journeys.

Baba: How long tour do you go on?

Student: Approximately six months.

Baba: Approximately six months. There was a Baba in the Advance Party. He went on tour for many years. He kept a folding stove in an old suitcase, a frypan and a plate.

Student: Baba, there is a rule that we cannot carry stoves during journeys.

Baba: You can carry empty ones. Can you carry empty stoves or not? Can't you?

Student: We can.

Baba: You can carry it. There are shops everywhere. Yes, it is true that if you have to purchase kerosene in black (market), you may get it at two or three times the price. OK, leave that aside. It has been said in the Murlis that someone sticks to eating raw vegetables, someone sticks to eating fruits, will he not survive? Will he not? Arey! you have become quiet.

Student: He will survive Baba.

Baba: Yes, he will survive. In addition he will become purer (satvik).

Student: The entire issue...

Baba: The entire issue is that the more you follow the rules, the more benefits you will reap.

जिज्ञासु— स्थूल स्नान के बारे में भाई पूछ रहा है।

बाबा— स्थूल स्नान। जो बात स्थूल में लागू होती है वो बात सूक्ष्म में भी लागू होती है। लौकिक दुनिया में रहकर के जो बहुत झूठा धंधा करते हैं। स्थूल दुनिया में स्थूल धंधे-धोरी में लौकिक दुनिया में जो बहुत झूठा धंधा करते हैं उनके संस्कार कैसे पड़ जाते हैं? झूठपने के संस्कार पड़ जाते हैं; छल-छिद्र-कपट के। वो ज्ञान में भी आ जावेंगे तो कैसे संस्कार होंगे? वही झूठे संस्कार पर चलेंगे। इसलिए बाहर की शुद्धि भी होनी चाहिए और अंदर की शुद्धि भी होनी चाहिए। अंदर-बाहर एक होना ही अच्छा है। जैसे मुसलमान है, भक्तिमार्ग में मुसलमान होते हैं, नहाना पसंद करते हैं? मुसलमान जुम्मा-जुम्मा स्नान कर लेते हैं। ये कहाँ की यादगार है?

जिज्ञासु— संगम की।

बाबा— संगमयुग की यादगार है। यहाँ भी जो मुसलमान आत्मायें हैं, क्रिश्चियन आत्मायें हैं रोज नहीं स्नान करती हैं; ज्ञान स्नान। रोज गीतापाठशाला में नहीं जायेंगे। क्या करेंगे? सात दिन में एक बार चले जायेंगे बस।

जिज्ञासु— जुम्मा-2 क्लास करते हैं।

बाबा— हाँ, वो सातवें दिन स्थूल स्नान करते हैं और यहाँ ज्ञान में सातवें दिन ज्ञान का स्नान करते हैं। यहाँ की शूटिंग वहाँ चलती है स्थूल में। तो आपने स्थूल बात पूछी या सूक्ष्म?

जिज्ञासु—.....

बाबा— आजकल सर्दी ज्यादा है?

जिज्ञासु—.....

बाबा— हाँ, जी।

Student: The brother is asking about physical bathing.

Baba: Physical bathing. Whatever is applicable in a physical sense is also applicable in a subtle sense. Those who pursue a lot of false businesses while living in the outside world; what kind of sanskars do those who pursue a lot of false businesses in the outside world, develop? They develop sanskars of falsehood, of cunningness, deceit and wickedness. Even if they enter the path of knowledge what kind of sanskars do they develop? They will follow the same false sanskars. This is why there should be purity outside as well as inside. It is better to be alike outside and inside. For example the Muslims; there are Muslims in the path of bhakti – do they like to take bath? Muslims bathe once a week. It is a memorial of when?

Student: The Confluence Age.

Baba: It is a memorial of the Confluence Age. Even here, the Muslim souls, the Christian souls do not bathe in knowledge everyday; they will not go to the *gitapathshala* everyday. What will they do? They will go once in seven days. That is all.

Student: They attend classes once in a week.

Baba: Yes, they (i.e. the Muslims) bathe every seventh day and here in the path of knowledge, they (i.e. the souls of Muslim religion) bathe in knowledge every seventh day.

The shooting that takes place happens in physical sense there. So, did you ask about the physical thing or the subtle thing?

Student said something.

Baba: Is it colder nowadays?

Student said something.

Baba: Yes.

जिज्ञासु— बाबा, लहसुन को अगर मेडिसिन के लिए इस्तमाल करें तो खाना है?

बाबा— लहसुन को मेडिसिन के रूप में?

जिज्ञासु— हाँ, जी।

बाबा— हाँ, लहसुन की पिल्स आती है। लहसुन की कैप्सूल आती है। जब तक बीमारी है तब तक ना?

जिज्ञासु— माना कभी-2 लेना पड़ जाये। जुकाम हो जाता है....

बाबा— जुकाम हमेशा थोड़े ही रहता है कि परमानेंट हो गया?

जिज्ञासु— कभी-2 की बात कर रहे हैं।

बाबा— कभी-2 की बात दूसरी है। कभी-2 ऐसे होता है कि बीमारी कन्ट्रोल नहीं होती है, इतना योगबल नहीं है हमारे अंदर तो क्या अहंकार दिखाना जरूरी है? दवाई ले लो। दवाईयाँ सब आयुर्वेदिक थोड़े ही बनती हैं, हर्बल दवाईयाँ सब थोड़े ही बनती हैं। दवाईयों में कीड़े-मकोड़े भी यूज किये जाते हैं। ऐसे ही लहसून का और प्याज का आलटरनेटिव भी मिलता है कोई न कोई। वो भी यूज कर सकते हैं।

Student: Baba, can we consume garlic (*lahsun*) as a medicine?

Baba: Garlic in the form of a medicine?

Student: Yes.

Baba: Yes, you get garlic pills. There are garlic capsules. You will consume only as long as you are sick, won't you?

Student: I mean to say if we have to take sometimes. Suppose we are suffering from common cold....

Baba: Do you catch cold always? Is it permanent?

Student: I am talking about sometimes.

Baba: If it is sometimes, it is a different issue. Sometimes it happens that we are not able to control the disease; we do not have the power of yog to that extent; so, is it necessary to show the ego? Take medicines. All the medicines are not Ayurvedic; all the medicines are not herbal. Worms and insects are also used in medicines. Similarly, some or the other alternative of garlic and onion are also available. You can use that too.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.